SWETA DUBEY
ASST.PROFESSOR,
GSCW B.Ed., PEDAGOGY OF SCHOOL SUBJECT
ECONOMICS,SEM-2, PAPER-VII A UNIT-I
TOPIC- CORRELATION OF ECONOMICS WITH OTHER SUBJECT
SUB TOPICE-TYPE OF CORRELATION PART-II

Scanned with CamScanner

सह-सम्बन्ध के प्रकार (Types of Correlation) :

सह-सम्बन्ध मुख्यतया तीन प्रकार से स्थापित किया जा सकता है -

1. शीर्षात्मक सह-सम्बन्ध (Vertical Correlation)

एक विषय के बहुत से पहलू होते हैं । पाठ्यक्रम बनाने में इन पहलुओं को इस प्रकार से क्रमबद्ध किया जाता है कि विद्यार्थी को विषय का व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध ज्ञान हो जाये । अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु इसके पांच विशेष भागों-उपभोग, उत्पत्ति, विनिमय, वितरण एवं राजस्व पर आधारित है । चूंकि यह पाँचों भाग आर्थिक क्रियाओं से संबन्धित हैं, इसलिये इनमें सह-सम्बन्ध पाया जाता है।

अर्थशास्त्र के किसी भी पहलू के अध्ययन करने में इन भागों के सह-सम्बन्ध को समझना आवश्यक होता है । इस प्रकार का सह-सम्बन्ध स्थापित करना ही शीर्षात्मक सह-सम्बन्ध कहलाता है अर्थात एक विषय के विभिन्न पहलुओं एवं भागों में सह- सम्बन्ध स्थापित करना । इसी प्रकार से किसी प्रकरण को पढ़ाते समय पूर्व ज्ञान का प्रयोग शीर्षात्मक सह-सम्बन्ध का एक रूप है ।

Scanned with CamScanner

2. क्षैतिज सह-सम्बन्ध (Horizontal Correlation):

ऊपर बताया जा चुका है कि मानवीय अनुभवों पर आधारित विभिन्न विषयों में सह-सम्बन्ध स्थापित करके ही सही एवं समग्र ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है । एक विषय को पढ़ाते समय अक्सर दूसरे विषय की विषय वस्तु का हवाला देने की आवश्यकता पड जाती है जैसे भारतीय अर्थव्यवस्था के बहुत से पहलुओं के अध्ययन में भूगोल की विषय वस्तु की । इस तरह एक विषय को दूसरे विषयों से संबन्धित करने को क्षैतिज सह-सम्बन्ध कहा जाता है । इस प्रकार का सह-सम्बन्ध आकस्मिक हो सकता है अथवा नियोजित ।

Scanned with CamScanner

माध्यमिक स्तर तक सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम निर्माण में अक्सर क्षैतिज सह-सम्बन्ध को ध्यान में रखा जाता है। N.C.E.R.T. के प्रलेख 'The Curriculum for the Ten Year School-A Framework' में कहा गया है कि प्रथम से दसवीं कक्षा तक सामाजिक विज्ञानों के पाठ्यक्रम में इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र और अर्थशास्त्र के विषय होने चाहिये। इनका शिक्षण ऐसे संश्लिष्ट रूप में करने की आवश्यकता होगी कि विद्यार्थी अलग-अलग विषयों की सम्पूर्णता को नष्ट किये बिना ही तथ्यों और समस्याओं के प्रति ठीक-ठाक समझ का विकास कर सकें।

Scanned with CamScanner

समाजिक विज्ञान के इन विषयों को जो विषयवस्तु अध्ययन के लिये चुनी जायेंगी उन्हे पृथक (Isloted) दिमाग न समझ कर अन्तसंबन्धित (Interrelated) समझना चाहिये ।

3. जीवन से सह-सम्बन्ध (Correlation with life)

अर्थशास्त्र मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं से संबन्धित विषय है । मानवीय जीवन के हर अंग का एक आर्थिक पहलू होता है । अर्थशास्त्र को जीवन से सह-संबन्धित करने का अर्थ यह है कि अर्थशास्त्र से संबन्धित सम्प्रत्ययों, सिद्धान्तों, प्रवृत्तियों आदि को स्पष्ट करते समय उनका सम्बन्ध वास्तविक जीवन से स्थापित किया जाये । इससे विद्यार्थी को इनकी सही जानकारी प्राप्त हो जायेगी और वह इस ज्ञान का प्रयोग व्यवहारिक जीवन में पेश आने वाली घटनाओं एवं समस्याओं में कर सकेंगे । विद्यालय में सहकारी भण्डार, केण्टिन, संचायिका स्कीम आदि चलाकर विद्यार्थियों को आर्थिक संस्थाओं की जानकारी दी जा सकती है । इसी प्रकार से फार्म, फैक्ट्री बैंक आदि के भ्रमण और सर्वेक्षण द्वारा वे अर्थशास्त्र से संबन्धित विभिन्न सिद्धान्तों प्रक्रियाओं आदि का ठोस एवं स्थायी ज्ञान प्राप्त करते हैं ।

Scanned with CamScanner